विदेश में तीन दिन

जिलेट नैरेटिव — नांदो, लेखक

gillettenarrative.com

जिस सुबह वह मुझे लेने मेरी इमारत के नीचे आया, बहुत तड़का था — यही उसका काम करने का तरीक़ा था। वह हमेशा कहता कि सुबह के मुँह में सोना होता है, और उस वक़्त तुम जो कुछ करते हो, जो कुछ रचते हो, वह दोपहर में कभी दोहराया नहीं जा सकता। साढ़े पाँच बजे थे। उसने मुझसे आधे मज़ाक़ में कहा कि अपना पासपोर्ट ले आऊँ, और मैंने पलटकर कहा कि आख़िर सीधे-सीधे बता क्यों नहीं देते कि हम असल में जा कहाँ रहे हैं।

सिसिली इटली का ही हिस्सा है, मैंने कहा, इसके लिए पासपोर्ट की क्या ज़रूरत — पर वह हँसा और बोला: तुम जैसे बंदे के लिए, जो देहात और छोटे क़स्बों का आदी है, इस तरह के इलाक़े का — अगर तुम कातानिया जैसे शहर में, दस लाख लोगों के बीच, खो जाओ, तो कम-से-कम लोग यह तो बता ही देंगे कि तुम कहाँ के हो और तुम्हें घर भिजवा देंगे। हा हा हा हा हा हा हा।

यही उसका यह कहने का तरीक़ा था: सुप्रभात नांदो, मैं आ गया, और मैं जानता हूँ कि तुम कोई दुनिया घूमने वाले नहीं हो।

हम फ़ेरी पर पहुँचे, और उसने मुझे ऊपर से नीचे तक देखा। इस मौक़े के लिए मैंने एक नीला सूट ख़रीदा था, एक हल्की नीली क़मीज़, एक नीली टाई, नए जूते जो चरमराते थे, और मुझे पूरी बात पर आत्मविश्वास था। मैंने दाढ़ी बनाई थी, अपने किसी क्लासिक जिलेट आफ़्टरशेव में से एक लगाया था, बाल क़रीने से थे, रूह साफ़ थी — मैं सचमुच सँवरा हुआ था। पर किसी बात ने मुझे ठिठककर सोचने पर मजबूर किया: मुझे पता था कि उसके मन में कुछ चल रहा है, बस यह नहीं पता था कि क्या।

उसने मुझे बाँह से पकड़ा — चलो बार चलते हैं, पहली मंज़िल पर — मुझसे कहा कि पीछे-पीछे आऊँ, और जब हम वहाँ पहुँचे तो वह मुझे सीधे मर्दों के शौचालय में खींच ले गया।

उसने मुझसे कहा कि जैकेट उतार दूँ, टाई, क़मीज़, अपना चेहरा ढंग से धोऊँ और उस बदनाम आफ़्टरशेव से पीछा छुड़ाऊँ — उसने कहा कि यह बूढ़ों की चीज़ है, इससे उसे अपने दादा की याद आती है जो ऐसा ही लगाया करते थे, इतना तेज़ कि मच्छरों और अपनी दादी, दोनों को दूर रखे।

उसने टाई की जगह मुझे एक ऐस्कट स्कार्फ़ थमाया, और जैकेट के लिए एक पॉकेट-रूमाल। फिर उसने मेरी बिलकुल नई कासियो घड़ी उतार दी, वही जिसमें कैलकुलेटर जुड़ा था, और मुझे एक डिब्बे से सीधे निकली घड़ी दी — एक ओमेगा सीमास्टर, स्टील का केस — कहा कि इसे दाहिनी कलाई पर पहनूँ, और दूसरी कलाई पर एक सफ़ेद-चाँदी का कड़ा सरका दिया।

मुझे लगा बस इतना ही था, पर तभी उसने अपनी जेब से फ़्रांसीसी इत्र की एक छोटी शीशी निकाली, स्त्रियों वाली, और मुझ पर छिड़क दी।

यह तो औरतों का इत्र है, जॉर्जियो, तुम कर क्या रहे हो?

उसने मुझे रोका और कहा: मर्द और औरतें अक्सर विपरीत लिंग के लिए बने इत्र लगाते हैं, इसलिए नहीं कि उनसे कैसी महक आती है, बल्कि इसलिए कि उन्हें करना क्या है। फ़िक्र मत करो, तुम समझ जाओगे — बस इस मामले में मुझ पर भरोसा रखो।

पर अब मुझे कुछ पता नहीं कि हम काम करने जा रहे हैं या तुमने मुझे बिना बताए औरतों के पीछे घूमने का कोई बहाना ढूँढ़ लिया है — बस इतना बता दो।

वह मुस्कुराया और बोला: हम काम करने जा रहे हैं, औरतों के पीछे नहीं — पर एक ख़ास औरत ज़रूर है जिसके नाम का हम पर एहसान है, और उसे कभी न भूलना: उसका नाम है चाची लॉरियल।

अब फ़ेरी से उतरने, सिसिली की धरती पर क़दम रखने का वक़्त था — हालाँकि किसी ने हमसे कभी पासपोर्ट नहीं माँगा। सड़कें साफ़ थीं, और लोग आदर से "लेई" कहकर बात करते थे, जबकि अपने घर कालाब्रिया में हम हमेशा पुराना "वोई" इस्तेमाल करते थे। यही पहला फ़र्क़ था, मेरा पहला सबक़: हम सचमुच परदेस में थे।

फर्दिनांदो

आर्काइव | फर्दिनांदो फ्रेगा — नांदो, लेखक | © 2026 Gillettenarrative.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।